नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

कोरोना महामारी में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का डिजिटल रूपांतरण: नवाचार, परंपरा और वैश्विक पहुँच

विजेता शर्मा
शोधार्थी,
महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी, बड़ौदा

डॉ. अश्विनी कुमार
शोध पर्यवेक्षक व सहलेखक
एसोसिएट प्रोफेसर, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी, बड़ौदा

सार-संक्षेप

कोरोना संक्रमण काल हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में मूलभूत परिवर्तनों का प्रतीक रहा। सामाजिक दूरी, लॉकडाउन तथा सार्वजनिक आयोजनों पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण कलाकारों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं शिक्षण कार्य हेतु डिजिटल माध्यमों की ओर उन्मुख होना पड़ा। इस प्रक्रिया में विश्वभर के कलाकारों एवं शिष्यों को एक साझा मंच पर जोड़ने का अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक शिक्षण पद्धति का आंशिक ह्रास भी परिलक्षित हुआ। प्रस्तुत शोध में यह अध्ययन किया जाएगा कि किस प्रकार वर्चुअल सांगीतिक आयोजनों एवं ऑनलाइन कक्षाओं ने पारंपरिक ढाँचे को चुनौती देते हुए हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहुँच प्रदान की। साथ ही, कुछ प्रमुख फेसबुक पेजों एवं यूट्यूब चैनलों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण और वर्चुअल आयोजनों की प्रभावी व्यवस्था के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का भी विश्लेषण इस अध्ययन में शामिल किया गया है। कार्यप्रणाली हेतु मैंने कोरोना काल में प्रकाशित लेख, समाचार-पत्र एवं शोधपत्रों का विश्लेषण किया, साथ ही, लाइव कॉन्सर्ट, ऑनलाइन वर्कशॉप तथा ऑनलाइन साक्षात्कारों का अध्ययन भी शोध कार्यप्रणाली का अंग रहा।

मुख्य शब्द : हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, कोरोना महामारी, डिजिटल रूपांतरण, परंपरा और नवाचार।

शोध-पत्र

परिचय

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत हमेशा से समाज की चेतना और भावनाओं का प्रतिबिंब रहा है। "इतिहास में जब-जब समाज की भावनाएँ बदलीं, तब संगीत ने भी नया रूप धारण कर स्वयं को पुनः अभिव्यक्त किया है।" (तैलंग एवं शर्मा 2) "संगीत एक सर्वोच्च कला है, जिसे मात्र पढ़कर या पढ़ाकर नहीं, अपितु संयम व साधना के साथ सीखा-सिखाया जाता है।"(सचदेवा एवं श्रीवास्तव 5) महान भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्दों में "सापेक्षता का सिद्धांत मुझे अंतर्ज्ञान से प्राप्त हुआ और संगीत इस अंतर्ज्ञान के पीछे एक प्रेरक शक्ति है।"(सचदेवा एवं श्रीवास्तव 5)

सन् 2020 में आई वैश्विक महामारी कोरोना ने नाद-ब्रह्म की प्राचीन अवधारणा से जुड़ी परंपरा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को प्रबल चुनौती दी। पारंपरिक संगीत-सम्मेलन तथा संगीत सभाएँ स्थगित हो जाने के बाद संगीतकार ऑनलाइन मंच, वर्चुअल कॉन्सर्ट व डिजिटल गुरुकुल के माध्यम से श्रोताओं एवं विद्यार्थियों से जुड़े। "महाविद्यालयों एवं संगीत संस्थानों ने ऑनलाइन कक्षाओं और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, वहीं विश्वविद्यालयों के संगीत विभागों ने डिजिटल माध्यम से विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन कक्षाएँ, संगोष्ठियाँ अथवा कार्यशालाएँ सम्पन्न कीं।"(Bhavani 2)

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्राचीन प्रतिनिधि जो पहले डिजिटल माध्यमों और मोबाइल तकनीक से दूरी बनाए हुए थे, उन्होंने भी कोरोना महामारी के समय डिजिटल माध्यमों को एक नए अवसर के रूप में अपनाया। "उस्ताद राशिद ख़ान तथा पं. राजन एवं साजन मिश्र जैसे प्रतिष्ठित कलाकारों ने अपने फेसबुक पेज व यूट्यूब चैनल के माध्यम से रियाज़ से जुड़ी मुख्य बातें और शिक्षाप्रद वीडियो साझा किए।"(Rashid Khan and Rajan Sajan Mishra) अनेक संगीत शिक्षक और कलाकारों ने पहली बार फेसबुक पेज व यूट्यूब चैनल बनाकर विद्यार्थियों एवं श्रोताओं के लिए नियमित रूप से संगीत शिक्षण अथवा प्रस्तुतियों का आयोजन प्रारंभ किया। इन प्रयासों से न केवल

स्थानीय विद्यार्थी लाभान्वित हुए, बल्कि देश-विदेशों में बैठे शिष्य एवं श्रोतागण भी आसानी से जुड़ पाए।

"ऑनलाइन संगीत शिक्षण में ॐ स्वरलिपि अत्यंत कारगर रही, जो विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के लिए प्रयोगात्मक पक्ष की दृष्टि से रामबाण सिद्ध हुई।"(पुरोहित 2) ऑनलाइन संगीत शिक्षण के माध्यम से शिक्षण कार्य लगभग 50% क्षमता के साथ सुचारु रूप से संपन्न हो पाए। डेटा संबंधी समस्याएँ, इंटरनेट कनेक्टिविटी की बाधाएँ तथा शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य दूरी जैसी अनेक चुनौतियों के कारण 100% अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सके। वर्चुअल मंचीय प्रस्तुतियों में भी विभिन्न तकनीकी बाधाओं का सामना कलाकार एवं श्रोता दोनों को करना पड़ा।

डिजिटल रूपांतरण

कोरोना महामारी ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य आधारित शिक्षण परंपरा एवं मंचीय अभिव्यक्ति दोनों को तकनीकी स्तर पर मुख्य रूप से प्रभावित किया–

- **पारंपरिक संगीत-शिक्षण से वर्चुअल संगीत-शिक्षण–** "हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का पारंपरिक शिक्षण सदियों से गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित रहा है, जिसमें शिक्षण का स्वरूप मौखिक परंपरा एवं प्रत्यक्ष संवाद पर टिका होता है।"(दीपक सिंह 1) पहले जहाँ शिष्य गुरु के चरणों में बैठकर ही ज्ञान प्राप्त कर सकता था, वहीं आज स्क्रीन और कैमरे के माध्यम से सब संभव हो रहा है। इस परिवर्तन ने परंपरा को खंडित तो नहीं किया, लेकिन 'सीना-ब-सीना' तालीम, जिसमें गुरु-शिष्य का प्रत्यक्ष संवाद तथा संगीत की बारीकियों का सीधा आदान-प्रदान होता है, आभासी माध्यम में उस रूप में मिल पाना सम्भव नहीं।
- यह यह डिजिटल परिवर्तन सिर्फ उस कठिन समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आज कुछ चुनिंदा संगीताचार्य डिजिटल माध्यमों के जरिए निरंतर संगीत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जिनसे इस विषय पर चर्चा करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

'स्वर संस्कार संगीत गुरुकुल, ग्वालियर' (श्री संजय देवले)

'स्वर संस्कार' के निर्देशक श्री संजय देवले ने कोरोना काल में अपने विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा से नियमित जुड़े रहने के उद्देश्य से इस फ़ेसबुक पेज पर ऑनलाइन संगीत शिक्षण की शुरुआत की, तब से लेकर आज तक इस पेज पर निःशुल्क संगीत शिक्षा नियमित रूप से दी जा रही है। संजय देवले जी ने बताया कि "लगभग 59,000 संगीत प्रेमी उनके फेसबुक पेज को फॉलो करते हैं, जिनमें से लगभग 20% संगीत प्रेमी विभिन्न देशों से हैं। 'स्वर संस्कार' पेज के माध्यम से संजय देवले जी ने 450 से अधिक लाइव रियाज़ क्लासेज अब तक आयोजित की हैं, जिनमें अलग-अलग रागों को सिखाया गया है।" (संजय देवले)

आरम्भिका, श्रीमती स्मिता सहस्रबुद्धे (कुलपति, RMTU), मई 2020

माननीय कुलपति राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश), डॉ. स्मिता सहस्रबुद्धे ने कोरोना महामारी में विद्यार्थियों को संगीत से जोड़े रखने के उद्देश्य से 'आरम्भिका' फेसबुक पेज की शुरुआत की। इस फेसबुक पेज के माध्यम से विद्यार्थियों को पारंपरिक गायन की बारीकियों के साथ-साथ भातखंडे संगीत पद्धति के अलंकार एवं विभिन्न रागों की जानकारी प्रदान की जाती है। उल्लेखनीय है कि वर्तमान समय में भी अपनी व्यस्तताओं के बीच समय निकालकर डॉ. स्मिता सहस्रबुद्धे 'आरम्भिका' फेसबुक पेज पर विद्यार्थियों से सतत् जुड़ी रहती हैं और रागदारी पद्धति पर सारगर्भित चर्चा कर उन्हें मार्गदर्शन देती हैं। "कोरोना महामारी में लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान लगभग 50 से 70 विद्यार्थियों की उपस्थिति इस पेज पर देखी गई। वर्तमान में जब भी डॉ. स्मिता लाइव कक्षा आयोजित करती हैं, तो 20 से 30 विद्यार्थी इसका लाभ उठाते हैं।" (स्मिता सहस्रबुद्धे)

- **सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं की समीक्षा:** "संगीत शिक्षण के लिए ऑनलाइन माध्यम का चयन केवल लॉकडाउन के समय ही नहीं हुआ, अपितु इससे पूर्व भी संगीत का शिक्षण ऑनलाइन माध्यम से होता रहा था; किन्तु यह प्रक्रिया सर्वसाधारण के मध्य प्रचलित नहीं थी।"(दीपक सिंह 2) इंटरनेट के इस तकनीकी युग ने शिक्षा की निरंतरता तो बचा ली, पर संगीत जैसे सूक्ष्म कला-विषय में प्रत्यक्ष संवाद की कमी ने उसकी पूर्णता को सीमित भी किया। यही द्वंद्व डिजिटल शिक्षा की असल परीक्षा है। अतः संगीत की आध्यात्मिकता को समझने और इसकी साधना के लिए गुरु-शिष्य परंपरा की परम आवश्यकता है।
- **वर्चुअल मंच पर अभिव्यक्ति का रूपांतरण**—कोरोना महामारी से पूर्व संगीत की प्रस्तुति का दायरा सभागारों, संगीत-समारोहों और विशिष्ट अकादमिक आयोजनों तक सीमित था, किंतु महामारी के दौरान कलाकारों ने कैमरा, माइक्रोफ़ोन और इंटरनेट को ही अपना नया 'संगीत-मंच' मानकर प्रस्तुतियों का सिलसिला शुरू किया। घरों के सामान्य कक्ष रिकॉर्डिंग स्टूडियो में परिवर्तित हुए और प्रसारण तकनीक ने प्रस्तुति को नवीन आयाम प्रदान किए। "फेसबुक लाइव, यूट्यूब स्ट्रीमिंग और ज़ूम मीटिंग जैसे साधन कलाकारों व श्रोताओं को एक-दूसरे से जोड़ने लगे।"(दीपक सिंह 3) आरम्भिक स्तर पर यह एक अस्थायी उपाय प्रतीत हुआ, किंतु शीघ्र ही इसने व्यवस्थित रूप धारण कर लिया।
- वर्चुअल मंच प्रदान करने वाले कुछ प्रमुख फ़ेसबुक पेज व यूट्यूब चैनल, जो शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं—

1. **Art and Artists**- पं. जसराज जी की सुपुत्री दुर्गा जसराज जी का 'Art and Artists' फ़ेसबुक पेज और यूट्यूब चैनल कोरोना महामारी में नियमित रूप से कलाकारों की ऑनलाइन प्रस्तुतियाँ साझा करता रहा है, जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से संचालित हो रहा है। "दुर्गा जसराज जी के पेज या चैनल पर लाइव प्रसारण के दौरान एक समय में लगभग 800 से 1000 श्रोता जुड़ते थे तथा 4000 से 5000 तक टिप्पणियाँ भी प्राप्त होती थीं।"(Durga Jasraj) मैं स्वयं एक श्रोता के रूप में इन प्रस्तुतियों की सहभागी रही हूँ। अन्य वर्चुअल मंचों की तुलना में यहाँ तकनीकी समस्याएँ अपेक्षाकृत कम देखी गईं।
2. **पं. रामाश्रय झा 'रामरंग'**—काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संगीत एवं मंच कला संकाय के गायन विभाग के प्रोफेसर डॉ. रामशंकर द्वारा संचालित पं. रामाश्रय झा ₹रामरंग₹ फ़ेसबुक पेज और यूट्यूब चैनल पर युवा कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया गया। साथ ही, "इस पेज पर परंपरागत विभूतियों के व्याख्यानों के माध्यम से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया गया, जिसकी प्रतिभागी मैं स्वयं रही हूँ।"(रमाशंकर) अन्य वर्चुअल मंचों की तुलना में लगभग 80 प्रतिशत से अधिक युवा वर्ग इस मंच पर सक्रिय रहा है।
3. **स्वर संस्कार**—संगीत गुरु श्री संजय देवले द्वारा संचालित 'स्वर संस्कार' फ़ेसबुक पेज और यूट्यूब चैनल ने कोरोना महामारी के दौरान 'महफ़िल' श्रृंखला के तहत कलाकारों की विविध प्रस्तुतियाँ श्रोताओं तक पहुँचाईं। यह पहल वर्तमान में भी लगातार जारी है, जिसमें श्रोता अब आभासी व प्रत्यक्ष दोनों रूप से जुड़ते हैं। "महफ़िल-श्रृंखला में अब तक लगभग 100 प्रस्तुतियाँ अलग-अलग कलाकारों द्वारा दी गई हैं। स्वर संस्कार पेज पर सभी वर्गों के श्रोताओं की सहभागिता रहती है, क्योंकि मंचीय प्रस्तुतियों के अतिरिक्त कोरोना महामारी के दौरान गायन-शिक्षण की व्यवस्था सर्वप्रथम इसी पेज पर आरंभ की गई। वर्तमान में प्रत्येक रविवार को यह कक्षा आयोजित की जाती है, जिसमें ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों से लगभग 200 की संख्या में विद्यार्थी जुड़ते हैं।"(Sanjay Devle)
4. **HCL Concerts**—"भारत की (IT) कंपनी HCL ने शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में अपनी पहल दिखाते हुए HCL Concerts फ़ेसबुक पेज और यूट्यूब चैनल के माध्यम से कलाकारों की प्रस्तुतियाँ लाइव प्रसारित करके श्रोताओं को घर बैठे संगीत का आनंद लेने का अवसर प्रदान किया। "HCL के इस पेज पर संगीत के अतिरिक्त अन्य श्रोता भी सम्मिलित होते थे, जिससे इसके लाइव स्ट्रीमिंग में श्रोताओं की संख्या लगभग 1000 तक पहुँच जाती थी।"(HCL)

- **सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं की समीक्षा :** पारंपरिक संगीत सभाएँ तकनीकी दक्षता प्रदान करने के साथ-साथ मंच पर प्रस्तुति का अनुभव और अनुशासन का बोध भी कराती हैं, जिसे वर्चुअल मंच के माध्यम से सीख पाना असंभव है। "मंच प्रदर्शन में सुधी श्रोताओं के कलागत भावों का आदान-प्रदान ही कलाकार की कला-प्रस्तुति में उत्कर्ष लाता है, जो लाइव स्ट्रीमिंग में संभव नहीं था।" (सुनीता श्रीमाली) कई बार तकनीकी समस्याओं जैसे- आवाज का स्पष्ट न आना, वीडियो दिखाई न देना, आसपास के शोर-गुल के कारण कलाकार की प्रस्तुति प्रभावित होती है, साथ ही श्रोता का जुड़ाव कम हो जाता है। इसके अलावा ऑनलाइन प्रस्तुतियों में अधिकतर कलाकारों का ध्यान गाने से ज्यादा साज-सज्जा पर देखा गया।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नवाचार के साथ परंपरा का संरक्षण: डॉ. पी.एल. गोहदकर (ग्वालियर घराना)

मेरे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है कि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की पारंपरिक पृष्ठभूमि से जुड़े, पं. बालासाहेब पूछवाले जी के शिष्य एवं ग्वालियर घराने के मूर्धन्य गायक डॉ. पी. एल. गोहदकर से मुझे परंपरागत गायन की मुख्य बातों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ।

डॉ. पी. एल. गोहदकर के शब्दों में–हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परंपराओं का संवाहक है तथा गुरु-शिष्य परंपरा इस संरक्षण की रीढ़ है। परंपराओं का संरक्षण केवल पुरातन रीतियों व शास्त्रीय नियमों को बनाए रखना नहीं है, बल्कि उन्हें वर्तमान संदर्भ में जीवित रखने और नई पीढ़ियों तक पहुँचाने का प्रयास भी है। आमने-सामने की बैठकों में जो स्वर की नज़ाकत, लय की सूक्ष्मता और भाव-प्रेषण की बारीकियाँ सहज ही आत्मसात हो जाती हैं, वे ऑनलाइन कक्षाओं में फीकी पड़ जाती हैं। इसके बावजूद, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संरक्षकों ने इस बदलाव को स्वीकारते करते हुए, वर्चुअल कार्यक्रमों तथा ऑनलाइन संवादों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान सुदृढ़ करने के साथ-साथ इसे सहेजने और सँवारने का प्रयास किया।

निष्कर्षः हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत हर युग की यात्रा में अपनी परिवर्तनशीलता के कारण ही शाश्वत और अनुपम दिखाई देता है। कोरोना महामारी में इंटरनेट एक क्रांतिकारी बदलाव लेकर आया। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अध्ययन तथा अध्यापन में डिजिटल संसाधनों की अत्यंत सार्थक भूमिका रही, क्योंकि उस समय शिक्षण एवं प्रस्तुतियों का एकमात्र विकल्प यही डिजिटल माध्यम थे। हालाँकि इन माध्यमों से संगीत का शिक्षण पूर्णतः उपयुक्त नहीं जान पड़ता। संगीत को गुरु-शिष्य परंपरा में रहकर, सीना-ब-सीना तालीम के माध्यम से ही सीखना अधिक उचित है। ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुतियों के क्रम में कलाकारों की पूर्व में की गई रिकॉर्डिंग के वीडियो तथा लाइव प्रसारण दोनों प्रकार की प्रस्तुतियाँ हो रही थीं, किंतु पारंपरिक मंचों पर कलाकार श्रोताओं से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करते हुए अपनी कला को अधिक कल्पनाशील एवं प्रभावी रूप में प्रस्तुत कर पाता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विशेष परिस्थितियों में डिजिटल माध्यमों का प्रयोग सराहनीय कार्य है; किंतु गुरु-शिष्य परंपरा एवं पारंपरिक मंचों से ही हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का संचरण अधिक गुणवत्तापूर्ण रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तैलंग, मधु भट्ट और सत्यवती शर्मा, संगीत एवं नवाचार, लिटरेरी सर्कल, जयपुर, 2019, पृ. 2.
2. सचदेवा, ओमप्रकाश एवं पुनिता श्रीवास्तव, "केंद्रीय विद्यालयों में संगीत शिक्षण प्रणालीः वर्तमान चुनौतियाँ एवं सुझाव," नाद नर्तनःजर्नल ऑफ़ डांस एंड म्यूज़िक, जनवरी 2025, पृ. 5. https://naadnartan.in/wp-content/uploads/2025/03/Omprakash-Sachdeva.pdf.
3. वही, पृ. 5.
4. Bhavani, U. "Impact of COVID-19 among the Indian Classical Artists: An Empirical Study," ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, May 2022, page no. 2. https://www.granthaalayahpublication.org/Arts-Journal/ShodhKosh/article/download/100/162/1117
5. Videos of Prominent Artists during the Corona Period:

   I. Khan, Rashid. "A #Different_Afternoon." Facebook, 24 May 2020. https://www.facebook.com/share/v/1C7dLtiFuL/ .

II. Mishra, Rajan and Sajan, "Pt. Rajan Mishra Last Video." YouTube, 26 Apr 2021. https://youtu.be/KOMf5q-cuAw?si=AcXW_8t7NL2K4G7 .
6. पुरोहित, दीपिका, "इंटरनेट से संगीत शिक्षणः समस्याएँ एवं समाधान," नाद नर्तनः जर्नल ऑफ़ डांस एंड म्यूज़िक, जून 2022, पृ. 2. https://naadnartan.in/wp-content/uploads/2023/02/Dipika.pdf
7. सिंह, दीपक, "संगीत में इंटरनेट की उपयोगिताः एक अध्ययन," नाद नर्तनः जर्नल ऑफ़ डांस एंड म्यूज़िक, जून 2022, पृ. 1. https://naadnartan.in/wp-content/uploads/2023/02/Dipak-Singh-2.pdf
8. देवले, संजय, "स्वर संस्कार," फेसबुक, जून 2012. https://www.facebook.com/Swarsanskargwalior
9. सहस्रबुद्धे, स्मिता, "आरंभिका," फेसबुक, मई 2020. https://www.facebook.com/aarambhika
10. सिंह, दीपक, "संगीत में इंटरनेट की उपयोगिताः एक अध्ययन," नाद नर्तनः जर्नल ऑफ़ डांस एंड म्यूज़िक, जून 2022, पृ. 2.

https://naadnartan.in/wp-content/uploads/2023/02/Dipak-Singh-2.pdf

11. वही, पृ. 3
12. Jasraj, Durga, "Art and Artistes," Facebook, May 2011. https://www.facebook.com/ArtandArtistes
13. Dr. Ramshankar. "Pt. Ramashray Jha 'Ramrang'," Facebook, July 2014. https://www.facebook.com/ramrangsamiti
14. Devle, Sanjay, "Swar Sanskar," Facebook, June 2012. https://www.facebook.com/Swarsanskargwalior
15. HCL Company. "HCL Concerts." Facebook, October 2014. https://www.facebook.com/HCLConcerts
16. श्रीमाली, सुनीता, "कोरोना काल में संगीतकला और कलाकार," इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, एप्लाइड साइंस और सोशल साइंस, जून 2021. https://inspirajournals.com/uploads/Issues/25535681.pdf.